आलस्य और अलबेलापन - 66

अव्यक्त बापदादा :- (15.12.2008)

➳ _ ➳ अभी नया वर्ष, अव्यक्त वर्ष आने वाला ही है। 40 वर्ष अव्यक्त पालना का हो रहा है। तो अव्यक्ति पालना और व्यक्त रूप की पालना को 72 वर्ष हो चुके हैं। तो क्या दोनों बाप की पालना का रीटर्न बापदादा को नहीं देंगे! सोचो - पालना क्या और प्रेक्टिकल क्या है? बापदादा ने देखा अभी भी अलबेलेपन और रॉयल आलस्य, रॉयल आलस्य है - हो जायेगा, बन ही जायेंगे, पहुंच ही जायेंगे और अलबेलापन है कर तो रहे हैं तो तो. यह तो होना ही है, यह तो करना ही है, कहने और करने में अन्तर हो जाता हैं। बापदादा एक दृश्य देख करके मुस्कुराता रहता हैं कि क्या कहते? यह हो जाये ना, यह कर लो ना, तो बहुत अच्छा मैं आगे बढ़ सकता हूँ। दूसरे को बदलने की वृत्ति रहती है लेकिन स्व परिवर्तन की वृत्ति कहाँ कहाँकम हो जाती है।

➳ _ ➳ अभी दूसरे को देखना यह वृत्ति चेंज करो। अगर देखना है तो विशेषता देखो, यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है, यह भी तो करते हैं. यह भावना कम करो। अपने को देखो, बाप को सामने रखो, बाकी तो कोई भी है, चाहे महारथी है, चाहे बीच वाला है, पुरुषार्थ में को न कोई कमी को परिवर्तन कर ही रहे हैं। इसलिए सी-फादर, सी-डबल फादर, ब्रह्मा बाप को देखो, शिव बाप को देखो।

➳ _ ➳ जब बाप ने आपको अपने दिलतख्त पर बिठाया है और आपने भी अपने दिलतखत पर बाप को बिठाया है, आपका स्लोगन भी है सी फादरा सी सिस्टर, सी ब्रदर यह स्लोगन है ही नहीं। कुछ न कुछ कमी सबमें अभी रही हुई हैं लेकिन दूसरे को देखना है तो विशेषता को देखो, जो कमी वह निकाल रहे हैं अपने से, उसको नहीं देखो।

➳ _ ➳ बापदादा भी यही चाहते हैं कि सब बच्चे साथ चले। पीछे नहीं रहे। बापदादा को बच्चों के बिना मजा नहीं आता हैं। तो दृढ़ता को कभी भी कमजोर नहीं करना। करना ही है। गे गे नहीं करना, करेंगे, देखेंगे, हो जायेगा. देख लेना, यह बातें नहीं करना। दृढ़ता सफलता की चाबी हैं, इस चाबी को कभी भी गंवाना नहीं। माया भी चतुर हैं ना, वह चाबी को ढूंढ लेती हैं, इसलिए इस चाबी को अच्छी तरह से सम्भालके रखी। गे गे नहीं करना, एक गे गे, दूसरा तो तो कहते हो. यह शब्द ब्राह्मण डिक्शनरी से निकाल दी। चलो, कोई की भी कोई कमजोरी देखते भी हो, पुरुषार्थी तो सब हैं, नहीं तो ब्राह्मण जीवन से चले जाते, पुरुषार्थी हैं तब तो ब्राह्मण जीवन में चल रहे हैं ना, मानो कई ऐसे कहते हैं मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ लेकिन दूसरे करते हैं ना तो वह सामने विघ्न बन जाता हैं। यह नहीं करे ना, यह बदले ना, लेकिन बाप ने पहले से ही स्लोगन दिया है, हमको बदलके उनको बदलना है। मुझे बदलना है। वह बदले तो मैं बदलू नहीं। सुनाया भाव और भावना को चेज करो।

➳ _ ➳ दूसरा शब्द बतायें क्या कहते हैं? क्योंकि आज बापदादा ने अच्छी तरह से चेकिंग की, दूसरा क्या करते हैं? चह तो चलता ही है, यह भी तो करता है ना, तो मैंने किया तो क्या हुआ। वह कुएं में गिर रहा हैं और आप भी गिरके देख रहे हो क्या यह समझदारी हैं।

➢➢ हर एक वह दिखाना चाहता है जैसा वह है नहीं...

➳_ ➳ चेक करें कहीं हमारा व्यक्तित्व थोपा हुआ तो नहीं..

➳_ ➳ कुछ और दिखाने में हमारा वास्तविक स्वरूप न खो जाये...

➢➢ दूसरों की कमी को नहीं देखना है...

➳_ ➳ देखना है तो दूसरों की विशेषता को देखो...

➳_ ➳ ब्रह्मा बाप और शिव बाप को देखो...

→ हमारा स्लोगन है... फोलो एंड सी फादर, न कि ब्रदर...

- दूसरों को देखोगे तो कभी कमी दिखेगी, कभी विशेषता...
- बाप सदा एकरस है, उसे देखो...

▸ अन्य तो पुरुषार्थी हैं... सभी की चेतना अलग अलग तल पर जगी है...

➢➢ दृढ़ता सफलता की चाबी है...

➳_ ➳ इस चाबी को माया चुरा लेती है... इसे सम्भालकर रखना है...

→ पासवर्ड लगाकर, याद और सेवा का डबल लोक लगाकर रखना होगा...

- तो तो, गे गे शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी में नहीं हो...
- भीड़ क्या कर रही है... भीड़ को देखने की वृत्ति न हो..

➢➢ बदलना आंतरिक प्रक्रिया है...

➳_ ➳ परिवर्तन तभी हो सकता है, जब deep realization हो...

→ अंदर जड़ों को पानी देंगे, देखभाल करेंगे, तो फूल स्वत खिलेंगे...

➢➢ दूसरों को नहीं देखना है..

➳_ ➳ इस संसार में सब दिखावा है... इस दिखावे से मुक्त हो जाना ही वास्तविक पुरुषार्थ है...

→ मैं जो हूँ... जैसा हूँ... वैसा ही सब देखें.... जो अभी बना ही नहीं, वह न देखें...

- अध्यात्म एक आंतरिक यात्रा है... वास्तविक एक आत्मा है... बाहर का सब दिखावा है...

▸ हमारी यात्रा आंतरिक है... अंतर्जगत के हम राही हैं... बाहर की यात्रा को बंद कर दें...